International Journal of Applied Research 2020; 6(5): 308-309

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(5): 308-309
www.allresearchjournal.com
Received: 19-03-2020
Accepted: 21-04-2020

जुली कुमारी
Research Scholar,
Department of Hindi,
Bihar University,
Muzaffarpur, Bihar, India

Correspondence Author:
जुली कुमारी
Research Scholar,
Department of Hindi,
Bihar University,
Muzaffarpur, Bihar, India

मन्नू भंडारी की कहानियों के स्त्री पात्र एक सर्वेक्षण

जुली कुमारी

मन्नू भंडारी की उपर्युक्त कहानी उनके दूसरे कहानी संग्रह तीन निगाहों की एक तस्वीर में संकलित है यह संग्रह सन् 1958 में प्रकाशित हुआ था तात्पर्य यह है कि कहानी में वर्णित परिस्थितिया साठवें दशक के उत्तरार्ध की अथवा उससे पहले की हैं किंतु स्त्री के लिए यह स्थिति कमोबेश आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है । सहज भाषा में रची गई यह कहानी पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना के भीतर अकेली बना दी गई । स्त्री के साथ साथ समाज संरचना की बारीक पड़ताल भी एकदम चुपचाप तरीके से करती चलती है।[1] उपर्युक्त कहानी की प्रारम्भिक तीन पंक्तिया स्त्री जीवन का पूरा समाजशास्त्र अपने में समेटे हुए हैं सोमा बुआ बुढिया हैं सोमा बुआ परित्यक्ता हैं सोमा बुआ अकेली हैं स्त्री को अकेला बना देने के दो सबसे बड़े कारण यहा दिए हुए हैं. बुढ़िया और परित्यक्ता॥ यदि दोनों एक साथ हैं। तो यह अकेलापन कई गुना भारी है तो क्या इन दोनों कारणों के नहीं होने पर स्त्री अकेली नहीं है कुछ देर को यह भ्रम हो सकता है कि भरे पूरे परिवार के बीच स्त्री किसी भी प्रकार के अकेलेपन से दूर हो जायेगी पर ऐसा है । नहीं क्योंकि पूरी संरचना स्त्री के विरूद्ध कुछ इस तरह से है कि वह कभी भी अकेली बना दी जा सकती है । अथवा प्रायः ही अकेली है असंगठित है घर के भीतर भी और घर के बाहर भी असंगठित होने के कारण अशक्त भी है । और बेचारी भी इसलिए यहा उपर्युक्त दोनों शब्द स्त्री जीवन की समाजशास्त्रीय व्याख्या करने के लिए अपनेआप में हो जाते हैं। मन्नू भंडारी ने अपने लेखन की शुरूआत ही ' मै हार गई' जैसी शिल्प की दृष्टि से प्रौदारी के साथ सहमति देना अवश्य परिपक्वता का सूचक है। वैसे भी हिन्दी कथा साहित्य अस्तित्व मे आने के तत्काल बाद ही परिपक्व होने की सूचना देने लगा था इसका प्रमाण है। इस कहानी में समाज–सापेक्ष यथार्थ और भाववादी, व्यक्तिवादी धरा दोनों का समावेश है। आगे चलकर हिन्दी कहानी में ये दो प्रवृत्तियाँ अलग अलग नज़र आती है मन्नू भंडारी द्वारा लिखे गये अध्यायो मे मनोविश्लेषण और दर्शन अधिक है। इस दृष्टि से मन्नू भंडारी प्रेमचंद की परम्परा में आती हैं और राजेन्द्र यादव अज्ञेय की परम्परा में आते हैं । मन्नू भंडारी ने आधुनिकता को अपनाते हुए भी कहानियों को बोझिल होने से रोका है, यह उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। साथ ही ऐसे समय में जब प्रेमचंद का परिवार विखंडित होकर आणविक परिवार बन रहा था, मन्नू भंडारी ने उस परिवार को सहेजे रखा । उनकी कहानियों में परिवार के सदस्य यदि अलग – अलग भी रहते हैं तो पत्रा अथवा आते–जाते रहने से एक सूत्रा में बोंध रहते है ।

उनके संबंधें की उफष्मा बची रहती है। 'निर्मल वर्मा' के 'परिंदे' की 'लतिका' के एकाकीपन और 'क्षय' की कुंती के अकेलेपन में खास अंतर है। लतिका के पास लौटने के लिए विकल्प नहीं है।, प्रेम करने की चाहत नहीं है और वह अपनी दिनचर्या से असंतुष्ट है। कुंती के जीवन में संघर्ष है पिफर भी वह हार नहीं मानती। वह इस तरह से अपने पिता की जिम्मेदारियों को आत्मसात किए हुए है कि कहानी के अंत तक आते–आते उसे लगता है कि उनकी बीमारी भी उसके जिस्म में समा गई है। मन्नू जी की कहानयिों में वर्णित स्त्री प्रतीक और संकेत के द्वारा अपनी रोमांटिक भावनाओं को नहीं व्यक्त करती और न ही अपनी ज़रूरतों को अनदेखा करती है। उसे पता है कि मुझे क्या चाहिए और उस चाहत को लेकर उसे कोई दुविध या संकोच नहीं है। 'यही सच है' की नायिका अपने प्रेमी के स्पर्श और आलिंगन की चाहना करते समय कही से भी अश्लील प्रतीत नहीं होती। एक युवा लड़की के मन में उस उम्र में जो आकांक्षाएँ उत्पन्न होनी चाहिए ये आकांक्षा भी वैसी ही है। हिन्दी कहानी के प्रारिम्भक दौर में आदर्शवादी, उपदेशात्मक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत कहानियाँ लिखी जा रही थीं। समाज में इस साहित्यिक विध को अच्छी निगाह से नहीं देखा जाता था। 'हिन्दी कहानी का विकास में मधुरेश लिखते हैं– '' सामाजिक प्रभाव की दृष्टि से कहानी को न र्सिफ उपेक्षणीय बल्कि युवाओं को बिगाड़ने वाली चीज़ माना जाता था।

यही कारण है कि श्रीमती राजा बाला घोष को अपना वास्तविक नाम छिपाकर 'बंग महिला' के नाम से कहानियाँ लिखनी पड़ीं। इससे भी अध्कि आश्चर्य तब होता है, कारण और कुछ भी हो सकता है, जब हम बाबू गिरिजा कुमार घोष को 'पार्वती नंदन' के नाम से कहानियाँ लिखते हुए पाते हैं।'' इस दृष्टि से जानें तो आधुनिक साहित्यिक परिदृश्य कापफी उदार है। मन्नू भंडारी की बहुचर्चित कहानी 'यही सच है' का कोई विरोध नहीं हुआ और न ही कमलेश्वर की कहानी 'तलाश' का 'तलाश' मे विधवा माँ के प्रेम संबंधें की साक्षी उसकी युवा बेटी है। मन्नू जी द्वारा लिखित कहानी 'यही सच है' पता नही कहीं पाठयक्रम में सम्मिलित है अथवा नहीं पर कमलेश्वर की कहानी 'तलाश' तो पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित है। इसका अर्थ यह लगाया जा सकता है कि हिन्दी कथा संसार काफी जल्दी परिपक्व हो गया है। शारीरिक आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति परिपक्वता की निशानी तो नहीं है, पर उचित आकांक्षा को समझदारी के साथ सहमति देना अवश्य परिपक्वता का सूचक है। वैसे भी हिन्दी कथा साहित्य अस्तित्व में आने के तत्काल बाद ही परिपक्व होने की सूचना देने लगा था इसका प्रमाण है। [2] इस कहानी में समाज–सापेक्ष यथार्थ और भाववादी, व्यक्तिवादी धरा दोनों का समावेश है। आगे चलकर हिन्दी कहानी में ये दो प्रवृत्तियाँ अलग अलग नज़र आती हैं। समाज–सापेक्ष यथार्थ को लकर प्रेमचंद और उनके स्कूल के कलाकर चले तो भाववादी व्यक्तिवादी धरा को लेकर जयशंकर प्रसाद, जैनेन्द्र, अज्ञेय और उनकी श्रेणी के कथाकार अध्ययन की सुविधा के लिए इस शोध प्रबंध को मैंने पाँच अध्यायों मे विभाजित किया है। पहले अध्याय 'स्वातंत्रयोत्तर भारतीय समाजः परिवर्तन के विविध आयाम' में भारतीय समाज में होने वाले परिवर्तन को दिखाया गया है।

यहां लेखिका ने कहानी को स्त्री के व्यक्तिगत दुख की परिधि से निकाल कर सत्रीत्व की व्यापक परिधि में खड़ा कर दिया है किंतु यथार्थ यह है । कि परित्यक्त और पुत्र शोक से ग्रस्त स्त्री के लिए जीवन की यह हरियाली समाज में छिपाने की बात है ।

जिसमें शामिल होने की इच्छा के आगे समर्पित हो कर उन्होंने अपने पुत्र की एकमात्र निशानी सोने की अंगूठी को बेच दिया है चूकि यह अंगूठी पुत्र की निशानी के साथ साथ उनका एकमात्र धन भी है इसलिए समधी को रस्म के तौर पर कुछ देने का यह प्रयास समधी को देने से ज्यादा अपने लिए कुछ पा लेना है या अपने एकांत को कुछ भर लेना अधिक है । नहीं तो राधा भाभी का सुझाया विकल्प तो था ही तो जाओ ही मत चलो छुट्टी हुई इतने लोगों में किसे पता लगेगा कि आई या नहीं पर यह विकल्प बुआ को स्वीकार्य नहीं है फिर इस विकल्प से तो पही होना है जो स्त्री के लिए तय किया गया है. इसतरह स्त्री छूटती चली जाएगी और अपने प्राणघातक एकांत में कैद होकर रह जाएगी। बुआ को इससे इंकार हैk आखिर मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तो स्त्री भी सामाजिक प्राणी है k परंतु पितृसत्तात्मक संरचना के भीतर उसे उनकी शर्तों पर शामिल होना है न कि मनुष्य होने के कारण परिणामतः कदम कदम पर उसे निषेधों से जूझना है और चूकि वह मनुष्य है इसलिए एक अदद अपने समाज की उसकी इच्छा अंततः नहीं मरती. सोमा बुआ की भी यह इच्छा अंततः बची रह जाती है । जो उन्हें बार बार की निराशा में भी उठा कर खड़ा कर देती है हांलाकि इस बार हरखू की एकमात्र निशानी को नातेदारी में होने वाली शादी के उपहार पर न्यौछावर कर देने के बाद बुलावे के इंतजार में छत पर खड़ी बुआ जो समधियों के यहां बिना बुलावे के नहीं जा सकती थीं जिस तरह संयत बने रहने की कोशिश करती हैं और अपने निकट पसरे यथार्थ को स्वीकार कर अपनी दिनचर्या में लौटती हैं वह विचलित करने वाला है और कोई भी सहृदय पाठक यहां पहुंच कर बुआ से फिर उठ खड़े होने की अपील करने से अपने को शायद ही रोक पाए

संदर्भ

1. स्त्री: उपेक्षिता, सीमोन द बोउवा, अनुवाद - प्रभा खेतान, पृ. 318
2. मन्नू भंडारी की चुनी हुई कहानियाॅ, अकेली, साहित्य भंडार, इलाहाबाद, पृ. 29